Department of Zoology

On-field dissemination of better techniques to the farmers and fisherman

Seminars, Radio and TV programs for better fish farming techniques

Department of Zoology

साक्षात्कार

मछली पालन से कम समय में अधिक मुनाफा

डॉ. रीना चक्रवर्ती

किसान खेतीबाड़ी के साथ-साथ डेयरी, मछली पालन व बागवानी आदि जैसे सहायक धंधों को अपनाकर अपनी आमदनी में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। मछली पालन एक फायदेमंद धंधा है। इसको अपनाकर किसान बढ़िया राशि कमा सकते हैं। ये बातें दिल्ली विश्वविद्यालय की मछली शोध विभाग की **प्रो. (डॉ.) रीना चक्रवर्ती** ने कही। प्रस्तुत हैं डॉ. चक्रवर्ती से बातचीत के कुछ अंश।

अ.ब.-आज किसान को कृषि से बहुत अधिक लाभ नहीं होता। उसपर प्राकृतिक आपदाएं जैसे बेमौसम बरसात, सूखा आदि कोढ़ में खाज का काम करती है। ऐसे में क्या मछली पालन किसान के लिए लाभकारी व्यवसाय बन सकता है?

डॉ. चक्रवर्ती-आज कम समय में अधिक मुनाफा कमाने के लिए मत्स्य पालन एक बेहतर विकल्प है। भारत उच्च जलीय विविधता से संपन्न देश है। विश्व में 24000 मत्स्य प्रजातियां पायी जाती हैं जिसमें से लगभग 2,300 मत्स्य प्रजातियां अकेले भारत में ही हैं।

अ.ब.-मछली पालन शुरू करने से पहले किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

डॉ. चक्रवर्ती-मत्स्य पालन शुरू से पूर्व किसान भाई सुनिश्चित कर लें कि आपके पास मत्स्य पालन के लिए उचित जगह हो, जहां तालाब की व्यवस्था हो सके। वर्षा ऋतु आने वाली है, उसके पहले यदि तालाब तैयार कर लेंगे तो पानी भरवाने के खर्च को घटाया जा सकता है। अगर जगह नहीं है तो सरकारी तालाब पट्टे पर लिये जा सकते हैं। आप तालाब लीज पर लेकर मत्स्य पालन कर सकते हैं। सरकारी तालाब पाने के लिए आप प्रधान द्वारा हस्ताक्षरित प्रार्थनापत्र पर तहसीलदार की अनुमति ले सकते हैं।

अ.ब.-आज हम खाद्य सुरक्षा की बात करते है? मछली पालन का खाद्य सुरक्षा में क्या योगदान हो सकता है?

डॉ. चक्रवर्ती-मछली में पोषक तत्व जैसे- प्रोटीन, खनिज एवं वसा अत्यधिक मात्रा में पाये जाते हैं। मछलियों में पोटेशियम, फास्फोरस, लोहा, सल्फर, तांबा तथा आयोडीन आदि खनिज पदार्थ भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। अपने इन सब गुणों के कारण जहां यह खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है वहीं इसका व्यावसायिक महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है।

अ.ब.-किसान को मछली पालन की तैयारी करते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

डॉ. चक्रवर्ती-मत्स्य पालन के लिए बहुत जरूरी है अण्डों व छोटी मछलियों का संरक्षण व देखभाल। इसके लिए छोटे सीमेंटेड गड्ढे या हौदी जैसी संरचनाएं प्रयोग में लाई जाती हैं जिन्हें हैचरी कहते हैं। हैचरियों में प्रमुख हैं सर्कुलर हैचरी, मॉडर्न कार्प हैचरी व चाइनीज हैचरी। **सर्कुलर हैचरी** को मछलियों के प्रजनन व अण्डों की देखभाल के लिए लगाया जाता है। इसमें यह सुनिश्चित कर लें कि पानी का गुरुत्वाकर्षण द्वारा लगातार बहाव हो। इसका व्यास 7 फुट व गहराई 3 से 4 फुट होनी चाहिए। इसकी तली केन्द्र में होनी चाहिए, और 4 से 6 इंच की ढलान रखनी चाहिए। दूसरी, **मॉडर्न कॉर्प हैचरी** ऊर्ध्वाधर हैचरी पद्धति है। इस हैचरी में पानी ऊर्ध्वाधर दिशा में बहता है। इसका व्यास 6 फीट व ऊंचाई 3 फीट होनी चाहिए। तीसरी, **चाइनीज हैचरी** चीन में विकसित की गयी थी। इनके तीन भाग होते हैं-प्रजनन पूल, हैचिंग पूल, स्पान संग्रह पूल (मछलियों के लार्वा संग्रहीत करने के लिए)। इनकी आंतरिक माप 4-2.5-1.2 मीटर होती है। इसकी ऊंचाई सतह से 2.6 मीटर ऊंची होनी चाहिए।

अ.ब.-मछली पालन के लिए तालाब निर्माण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

डॉ. चक्रवर्ती-हेचरी के निर्माण के बाद बेहद जरूरी होता है तालाब का चुनाव। मछली की हर अवस्था के लिए अलग तालाब का चयन करना होता है। छोटी मछलियों के लिए नर्सरी तालाब व बड़ी मछलियों के लिए संचय तालाब का निर्माण करना जरूरी है। तालाब निर्माण करते समय तालाब का नक्शा, मिट्टी का प्रकार तथा जल आने का स्रोत इन सब बातों का ध्यान जरूर रखें। **नर्सरी तालाब** एक छोटा, उथला व आयताकार तालाब होता है। नर्सरी तालाबों का क्षेत्रफल 0.01-0.10 हेक्टेयर तक रखना चाहिए एवं गहराई एक मीटर रखनी चाहिए। **संचय तालाब** का उपयोग मत्स्य बीज से मत्स्य उत्पादन के लिए किया जाता है। इसका क्षेत्रफल 0.2-2.0 हेक्टेयर तथा गहराई 1.5 मीटर रखनी चाहिए।

अ.ब.-तालाब के बांधों की बनावट कैसी होनी चाहिए?

डॉ. चक्रवर्ती-बांधों की चौड़ाई 1.0-1.5 मीटर तक होती है। पानी की सतह से ऊपर फ्री-बोर्ड लगभग 30-60 सेंटीमीटर रखना चाहिए। बांधों के निर्माण के लिए मुलायम और भुरभुरी मिट्टी का प्रयोग ना करें। बांधों को बनाने से पहले मिट्टी के धसने के लिए 10 प्रतिशत जगह छोड़नी चाहिए। ध्यान रखें मिट्टी में कोई भी जैविक तत्व ना हो।

अ.ब.-तालाब में जल के आगमन व निकासी की क्या व्यवस्था हो?

आयुर्वेद मत्स्य तालाब का उद्घाटन करते हुए डॉ. रीना चक्रवर्ती

डॉ. चक्रवर्ती-तालाब का निर्माण जितना जरूरी है उतना ही जरुरी है उसमें जल का आगमन व निकासी का प्रबंधन। जल की निकासी व आगमन की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिससे जलस्तर नियंत्रित रहे। पानी की निकासी तालाब में एक कोने पर पाइप के द्वारा होनी चाहिए। इसके लिए तालाब के एक कोने में ढलान होनी आवश्यक है।

अ.ब.-मछली की कौन-कौन की किस्में पाल सकते हैं?

डॉ. चक्रवर्ती-यदि आप कम समय में ज्यादा मुनाफा पाना चाहते हैं तो ऐसी किस्में चुने जो जल्दी बढ़ती हों ताकि मत्स्य उत्पादन कम समय में ज्यादा कारगर हो सके। अलग-अलग राज्यों के लिए इसके अलग-अलग मानक हैं। उदाहरणत: उ.प्र. की सिल्वर कॉर्प व ग्रास कॉर्प की किस्में ऐसी हैं जो कम समय में ज्यादा पैदावार देती हैं। किसान मिश्रित मछली पालन से एक साल में पांच से आठ टन मछली प्रति हेक्टेयर का उत्पादन आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। इसमें भारतीय मेजर कॉर्प-कतला, रोहू, मिग्रल तथा विदेशी कॉर्प-ग्रास कॉर्प, सिल्वर कॉर्प, कॉमन कार्प को निश्चित अनुपात में संचित कर तालाब में रखा जाता है और अगर मिश्रित पालन में अच्छी देख-रेख और तालाब की सफाई की जाए तो मत्स्य पालन में वृद्धि भी की जा सकती है। लखनऊ स्थित राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के शोधों से यह बात सामने आई है कि यदि किसान मिश्रित मछली पालन करें तो अपनी उत्पादन क्षमता करीब 12,000 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक बढ़ा सकते हैं।

अ.ब.-एक हेक्टेयर तालाब में कितना मत्स्य बीज संचय हो सकता है?

डॉ. चक्रवर्ती-25-50 मी. आकार के तालाब में 10-15 हजार मत्स्य बीज प्रति हेक्टेयर संचय किया जाना चाहिए।

अ.ब.-मत्स्य पालन के साथ और कौन-कौन से कार्य किये जा सकते हैं?

डॉ. चक्रवर्ती-समन्वित मत्स्य पालन योजनान्तर्गत बत्तख, पशु, सूकर आदि पालन किया जा सकता है जिसके साथ ही बन्धों पर पपीता, केला, सागभाजी भी उगाये जा सकते हैं।

अधिक जानकारी के संपर्क करें: डॉ. रीना चक्रवर्ती, जंतु विज्ञान विभाग, दि. वि.वि., दिल्ली

□□ अमित बहल